Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 2, Issue 3, September-December, 2024. pp. 155-173)

भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययनः एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क की आवश्यकता

केवल आनन्द काण्डपाल*

सारांश

भारतवर्ष की पहचान हमेशा से ही एक 'ज्ञान समाज' के रूप में रही है। भारतीय ज्ञान समाज की निर्मिति भारतीय ज्ञान परम्परा से हुई है। भारतीय ज्ञान परंपरा, अपने समाज एवं संस्कृति से निःसृत है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध और विविधतापूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर है। इसमें अध्यात्म, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, कला एवं अन्य क्षेत्रों का समावेश है और इनके मध्य गहरा संबंध भी है। भारतीय ज्ञान परम्परा का सबसे प्राचीनतम श्रोत 'वेदों' को माना जाता है। 'वेद' शब्द की व्युत्पत्ति 'विद्' धातु से मानी गयी है, जिसका अर्थ है 'जानना'। वेदों की श्रुति को भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रथम श्रोत भी कहा जाता है। परंपरा के अनुपालन के क्रम में तत्कालीन ऋषियों ने बाहरी अवलोकनों (दृश्य संसार के अवलोकनों) तथा चिंतन–मनन (अनुभव बोध, अंतर्दृष्टि) से वैदिक ऋचाओं की रचना की। परंपराकालीन ऋषियों द्वारा रचित 'ऋचाएं' इस परिवर्तनशील दुनियां से परे हमेशा समकालीन एवं उपयोगी बनी रहीं, यह भी कहा जा सकता है कि ये अपरिवर्तनीय बनी रहीं। बौद्धिक अन्वेषण के लगभग सभी क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा एक अहम् स्थान रखती है, और इसका विस्तार जीवन के सभी आयामों तक है। अध्यात्म, दर्शन से लेकर जीवानोपयोगी कौशलों तक लगभग सभी विषय क्षेत्र

*प्रधानाचार्य, राजकीय इंटरमीडिएट कालेज मण्डलसेरा, जनपद–बागेश्वर, उत्तराखण्ड। 263642.

भारतीय ज्ञान परम्परा के दायरे में समाहित हो जाते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा, प्राचीनतम श्रोत वेदों से आरम्भ होकर, उपनिषद, वेदांग, ब्राह्मण, आरण्यक, भाष्य, टीकाओं, परा एवं अपरा विद्या तथा कलाओं (64 जीवन कलाएं मानी गयी हैं) तक विस्तीर्ण हैं। समकालिक अध्येता इस तथ्य से सहमत नजर आते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम ज्ञान परम्पराओं में से एक है। इसका गहरा संबंध न केवल धार्मिक एवं अध्यात्मिक विचारों से है वरन यह सांसारिक जीवन के कला, विज्ञान, साहित्य, सामाजिकी, आर्थिकी और राजनीति से भी संबंध रखती है। व्यापक फलक एवं विस्तार की भारतीय ज्ञान परम्परा को समझने एवं आत्मसात करने के लिए, अध्ययन हेतु व्यवस्थित फ्रेमवर्क की नितांत आवश्यकता है। इसके अभाव में अध्येताओं के पथ–विचलन होने की प्रबल सम्भावना रहती है, इससे अध्येताओं के अध्ययन निष्कर्षों में व्यतिक्रम आ जाना स्वाभाविक है। एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क के अभाव में मनमाने अध्ययनों के परिणाम स्वरुप निष्कर्षों के दो ध्रुवीय छोर सामने आते हैं, पहला–भारतीय ज्ञान परम्परा का अति–रंजित महिमा–मंडन दूसरा–भारतीय ज्ञान परम्परा का नकार। ये दोनों ही अतियां वस्तु–स्थिति के प्रकटन में असफल कही जा सकती हैं। अतः भारतीय ज्ञान परम्परा के सुव्यवस्थित अध्ययन हेतु 'एक सुव्यवस्थित फ्रेमवर्क' की जरुरत रेखांकित होती है। भारतीय ज्ञान परम्परा के सातत्य, विस्तार एवं गहराई को जानने–समझने की दृष्टि से भी यह फ्रेमवर्क आवश्यक प्रतीत होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा का व्यवस्थित फ्रेमवर्क के आधार पर अध्ययन करने से न केवल इस परम्परा की गहराई, व्यापकता और सातत्य को समझा जा सकता है वरन यह भी शक्य है कि हम इसे समकालीन सन्दर्भों में लागू भी कर सकें। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से, भारतीय ज्ञान परम्परा को समग्र, ऐतिहासिक, बहु–सांस्कृतिक संवाद, समावेशी दृष्टिकोण, समकालीन चुनौतियों और विज्ञान एवं प्रद्योगिकी की दृष्टि से समझने के लिए एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क प्रस्तावित करने का प्रयास किया गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा के अवयवों के सन्दर्भ, श्रोत और सातत्य को जानने–समझने के लिए यह फ्रेमवर्क उपयोगी साबित हो सकता है। यह एक शुरूआती प्रस्ताव के रूप में है, निश्चित रूप से इसमें संशोधन, परिमार्जन और परिष्कार की गुंजाइश है। इसी मंतव्य से इस अध्ययन को प्रस्तुत किया जा रहा है। (538 शब्द)

मुख्य शब्दः भारतीय ज्ञान परम्परा, सातत्य, वेदांत, परा विद्या, अपौरुषेय, उपनिषद।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली में ज्ञान, विज्ञान, परम्पराएँ और जीवन–दर्शन आदि शामिल किये जाते हैं। यह प्रणाली अंतर्दृष्टि, अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और विश्लेषण के आधार पर

विकसित हुई है। भारतीय ज्ञान प्रणाली द्वारा 'मान्यता देने' और व्यवहार में अपनाने की ज्ञान परम्परा ने शिक्षा, कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, उत्पादन, उपभोग आदि सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। भारत वर्ष को प्राचीन काल से ही एक 'ज्ञान समाज' के रूप में जानना जाता रहा है। इस ज्ञान समाज की ज्ञान परम्परा का प्राचीनतम श्रोत 'वेद' माना जाता है। वेद शब्द की व्युत्पत्ति मौखिक धातु 'विद' से मानी गयी है। विद धातु का अर्थ है 'जानना'। वेदों की श्रुति परम्परा को भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रथम श्रोत की मान्यता प्राप्त है। श्रुति परम्परा का मुख्य कारण 'मन्त्रों की शुद्धता' के प्रति गंभीर आग्रह था। 'वे वेद को लिपिबद्ध करने की अनुमति नहीं देते क्योंकि उसका पाठ स्वर के विशिष्ट आरोह–अवरोह के अनुसार (सस्वर) किया जाता है और इसलिए वे लेखनी का प्रयोग नहीं करते क्योंकि उसमें किसी न किसी प्रकार की त्रुटि होंने की आशंका रहती है और दूसरे उसके कारण लिखित पाठ में कहीं कुछ जोड़ा जा सकता है या कोई दोष आ सकता है।'[1] भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार तत्कालीन ऋषियों (वस्तुतः अन्वेषकों) ने अंतर्दृष्टि (आतंरिक) एवं अनुभव–बोध (सांसारिक) के आधार पर वैदिक ऋचाओं और मन्त्रों का सृजन किया। परम्परा कालीन ऋषियों द्वारा सृजित 'ऋचाएं' हमारी निरंतर परिवर्तनशील दुनियां से परे अपरिवर्तनीय बनीं रहीं, इसलिए वैदिक ऋचाओं को 'नित्य' एवं 'अपौरुषेय' कहा जाता है। अर्थात ये शाश्वत (हमेशा समकालीन) हैं, अपौरुषेय (मनुष्यों द्वारा निर्मित नहीं) हैं। अपौरुषेय का अर्थ है 'ये रचनाएँ गैर आकस्मिक हैं, और विज्ञान की तरह इसके दावे अपनी सत्यता के लिए किसी व्यक्ति पर निर्भर नहीं हैं।'[2] बौद्धिक अन्वेषण के लगभग सभी विषय–क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान प्रणाली एक अहम् स्थान रखती है। बौद्धिक अनुशासन के सभी विषयों में शोध एवं अनुसन्धान हेतु महत्वपूर्ण आधारभूमि प्रदान करती है। उदाहरण के तौर पर भारतीय ज्ञान परम्परा में भौतिक चिकित्सक (Physician) आचार्य सुश्रुत ने अपनी पुस्तक 'सुश्रुत संहिता' में नाक की शल्य चिकित्सा (Rhinoplasty) के बारे में विवरण दिया है, यह पुस्तक 600 ई0पू0 की मानी जाती है, इस तरह से 'पाईथागोरस प्रमेय' का विवरण प्रसिद्द गणित बौधायन के 'सुलभ सूत्र' में आता है और यह पुस्तक 600 ई0पू0 की लिखी हई मानी जाती है। एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क के अभाव में मनमाने अध्ययनों के परिणाम स्वरुप निष्कर्षों के दो ध्रुवीय छोर सामने आते हैं, पहला–भारतीय ज्ञान परम्परा का अति–रंजित महिमा–मंडन दूसरा–भारतीय ज्ञान परम्परा का नकार। ये दोनों ही अतियां वस्तु–स्थिति के प्रकटन में असफल कही जा सकती हैं। अतः भारतीय ज्ञान परम्परा के सुव्यवस्थित अध्ययन हेतु 'एक सुव्यवस्थित फ्रेमवर्क' की जरुरत रेखांकित होती है।

अध्ययन के उद्देश्य

विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन द्वारा प्रयुक्त पारंपरिक ज्ञान की परिभाषा में कृषि ज्ञान, औषधीय ज्ञान, जैव–विविधता से सम्बंधित ज्ञान, संगीत, नृत्य, हस्तकला, डिजाइन आदि रूप में लोक कलाओं की अभिव्यक्ति जैसी श्रेणियां शामिल हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली में समाहित

चिंतन, दर्शन एवं ज्ञान के प्रति, जन मानस को हमेशा से ही आकर्षित किया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली की एक महत्वपूर्ण खासियत यह भी रही है कि विभिन्न चिंतन एवं दार्शनिक विचारधाराओं के निरंतर मध्य संवाद होता रहा। कभी भी मतारोपण (Indoctrination), भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य नहीं रहा। भारतीय ज्ञान परम्परा में विभिन्न चिंतकों, विचारकों के मध्य शास्त्रार्थ की स्वस्थ परम्परा रही है। भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान प्रणाली को आकार देने में धर्म–ग्रंथों के निरूपण, शिक्षा, दार्शनिक संवाद तथा विभिन्न चिंतन धाराओं के बीच शास्त्रार्थ की अहम् भूमिका रही है। इसके साथ–साथ यह भी यथार्थ है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली का विकास किसी विषय/अनुशासन विषय में सीमांकित न होकर समग्रता में हुआ है। इस कारण से जिज्ञासुओं, अध्येताओं, शोधकर्ताओं को बहुधा असमंजस, अस्पष्टता, भ्रम और भटकाव का सामना करना पड़ता है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रकृति, श्रोत, विकास एवं सातत्य को तार्किक स्पष्टता के साथ समझने की आवश्यकता है। इसके लिए गहन अध्ययन आधारित शोधों की आवश्यकता है। इसी के मध्येनजर यह अध्ययन एक शुरुआत कही जा सकती है। संक्षेप में, इस शुरुआती अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत रेखांकित किये जा सकते हैं–

- भारतीय ज्ञान परम्परा एवं ज्ञान प्रणाली की अवधारणात्मक समझ व्याख्या करना।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली के सातत्य एवं निरन्तरता को निरूपित करना।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली के श्रोतों को चिन्हित करना और वर्गीकरण करना।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझने के लिए एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क प्रस्तावित करना।

अध्ययन की आवश्यकता

हालिया घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 'भारत के ज्ञान' को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि "भारत का ज्ञान" में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसका योगदान शामिल होगा.......विशेष रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली को आदिवासी ज्ञान एवं सीखने के स्वदेशी एवं पारंपरिक तरीकों सहित कवर किया जाएगा और गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा–विज्ञान, साहित्य, खेल के साथ–साठ शासन, राजव्यवस्था, संरक्षण आदि विषयों में शामिल किया जाएगा।'[3] इसके बाद वर्तमान में भारत के शैक्षिक परिदृश्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर विमर्श, अध्ययन एवं शोध को गति मिली है। अध्ययनं एवं शोध व्यवस्थित तरीके से संभव हहो सकें, इसके लिए एक फ्रेमवर्क प्रस्तावित करने की दृष्टि से यह अध्ययन जरुरी प्रतीत होता है।

पृष्ठभूमि

भारत की प्राचीन और आधुनिक ज्ञान परम्परा दार्शनिक दृष्टिकोणों और चिंतन परम्पराओं

का संग्रह है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का इतिहास हजारों वर्ष पुराना मन जाता है और यह वेदों, उपनिषदों, भाष्य, टीकाओं और ग्रंथों में विद्यमान दर्शन, साहित्य, चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, वास्तुकला, कला, संगीत, व्याकरण, योग आदि जैसे महत्वपूर्ण विषयों को समाहित करता है। इस ज्ञान प्रणाली में मानवता के कल्याण एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के उपयोगी दृष्टिकोण निहित हैं। इस ज्ञान प्रणाली का अध्ययन आज के सन्दर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल अतीत के बारे में हमारी समझ बढ़ाता है वरन वर्तमान की समस्याओं एवं चुनौतियों के समाधान हेतु व्यापक दृष्टिकोण प्रदान कर मददगार साबित हो सकता है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में भारत में माध्यमिक स्तर पर 'नॉलेज ट्रेडिशन एंड प्रैक्टिसेज ऑफ इण्डिया' नाम से ऐच्छिक पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है। उच्च शिक्षा के स्तर पर विश्वविद्यालयों एवं उच्च तकनीकी संस्थानों से भी अपेक्षा की गयी है है कि पाठ्यक्रमों में इसका समावेश किया जाए, इस दिशा में शोध एवं अनुसन्धान की जरुरत को भी रेखांकित किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में 'भारतीय ज्ञान परंपरा और इसकी ज्ञान प्रणाली के व्यवस्थित अध्ययन हेतु एक फ्रेमवर्क की जरुरत रेखांकित होती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के व्यवस्थित अध्ययन हेतु फ्रेमवर्क के निर्माण के लिए निम्न अकादमिक कार्य, चरणबद्ध रूप से किये जाने की आवश्यकता है–

- **श्रोतों का संकलन एवं वर्गीकरण**–एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क के लिए ज्ञान परंपरा के प्राथमिक एवं द्वितीयक श्रोतों की पहचान एवं वर्गीकरण करने की तत्काल जरुरत है। यथा वेद, उपनिषद, शास्त्र, पुराण, भाष्य, टीकाएँ, ग्रंथ आदि को ज्ञान के अनुशासन (Discipline) में वर्गीकृत करने की तात्कालिक जरुरत है।

- **अध्ययन हेतु बहु**–विषयक दृष्टिकोण को मान्यता देना–यह सुखद है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विषयों की कठोर सीमाओं का परित्याग करके, लचीले बहु–विषयक अध्ययन की अनुशंसा की है। अब अध्ययनकर्त्ता विज्ञान विषय के साथ अपनी रुचि के विषय का चयन कर सकेंगे। यह बहु–विषयक दृष्टिकोण हमारी परंपरागत ज्ञान प्रणाली की संगति में है, और यह कदम निश्चित ही भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन को प्रोत्साहित करने में सहायक हो सकेगा।

- **डिजिटल प्रद्योगिकी का प्रयोग**–भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन को सुगम एवं सभी के लिए उपलब्द्ध कराने के लिए यह भी जरुरी है कि भारत के प्राचीन ग्रंथों का डिजिटलीकरण, साहित्य का आधुनिक भाषाओँ में अनुवाद किया जाए जिससे यह आम अध्येता, शोधकर्त्ता की आसान पहुँच (Acess) में हो।

- **संवाद**–भारतीय ज्ञान प्रणाली से संदर्भित विविध सेमिनार आयोजित करने की आवश्यकता है। यह संवाद इस कारण से भी जरुरी है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली के बारे में वर्तमान में एक अस्पष्टता है और इसके प्रति अतिरंजना और नकार के

दो–ध्रुवीय परिप्रेक्ष्य नजर आते हैं। अतः इसके समाधान के लिए सतत सेमिनरी संवादध्चर्चा बहुत जरुरी प्रतीत होती है। यह सेमिनार फेस टू फेस हो सकते हैं, ऑनलाइन हो सकते हैं। महज शोध एवं शोध आलेखों के लिखने एवं छपने से इस दिशा में बहुत मदद की उम्मीद नहीं की जा सकती है। सबसे जरुरी बात है कि अकादमिक संवाद हो, और इस संवाद से अस्पष्टता एवं संदेहों का निराकरण हो।

- **शोध एवं नवाचार**–भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन हेतु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित चिंतन, दर्शन, सिद्धांत एवं विचारधाराओं पर शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित किया जाए। ये शोध न केवल ज्ञान प्रणाली को व्याख्यायित करते हो वरन समकालीन समस्याओं के समाधान के दृष्टिगत भी होंने चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 घोषित होने के बाद इस प्रकार के शोधध्शोध पत्रों की संख्या बढ़ी है परन्तु यहीं पर यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि अध्ययन हेतु एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क के अभाव में अधिकाँश शोध कुछ विशेष ग्रंथों, किसी काल विशेष तक सीमित प्रतीत होते हैं। इससे भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक समग्र खाकाध्ढांचा अभिव्यक्त नहीं हो पा रहा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली के व्यवस्थित एवं समग्र अध्ययन हेतु एक फ्रेमवर्क उपलब्द्व नहीं है। यह फ्रेमवर्क भारतीय ज्ञान प्रणाली की समृद्ध बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विरासत को समझने, संरक्षित करने एवं वर्तमान सन्दर्भों में प्रासांगिकता की दृष्टि से बहुत जरुरी प्रतीत होता है।

साहित्यावलोकन

हालिया घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 'भारत के ज्ञान' को रेखांकित किया गया है। इसके बाद ही वर्तमान में भारत के शैक्षिक परिदृश्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली के बारे में उत्सुकता, विमर्श, अध्ययन एवं शोध को गति मिली है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का गहण अनुशीलन जरुरी था। इसके साथ–साथ गीता रहस्य (तिलक 1915), अनासक्ति योग (गाँधी 1929), भारत की खोज (नेहरु 1946), संस्कृति के चार अध्याय (दिनकर 1956), भारतः अलबरूनी अनुदित (अब्बासी 1992), हम भारत से क्या सीखें (मैक्स मुलर– अनुदित 1964), भारत की अंतरात्मा (राधाकृष्णन 1953), भारतीय दर्शन– भाग 1 एवं भाग 2 (राधाकृष्णन 1978, 1986), इंडियन नॉलेज सिस्टम (सम्पादित–कपिल कपूर 2005), भारतीय चिंतन परंपरा (दामोदरन 2018), कौन है भारत माता (सम्पादित , अग्रवाल 2022) के अध्ययन से भारतीय ज्ञान परंपरा के बारे में समझ परिपक्व हुई। इस अध्ययन के क्रम में यह विचार गह्नीभूत हुआ कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को जानने–समझने के लिए एक व्यवस्थित ढांचे (फ्रेमवर्क) की जरुरत है, इसके अभाव में अध्ययन/शोध में व्यतिक्रम संभावित है। प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप, इस

परिप्रेक्ष्य में अद्यतन शोध अध्ययनों का विश्लेषण किया गया। इनमें, सुब्रह्मियम चंद्रन (2019), पवन मांडवेकर (2023), राजेश थिमाने एवं प्रियंका वांधे (2024), साजिया अमानी (2024), जयंती पी. साहू (2024), अनिमेष दास एवं राकेश राय (2024), सलीम खान एवं मीता शर्मा (2024) के अध्ययन प्रमुख हैं। उक्त अध्ययन भारतवर्ष के संन्दर्भ हैं। यहीं पर यह पुनः उल्लेख करना समीचीन होगा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 घोषित होने के बाद भारतीय ज्ञान परंपरा/प्रणाली को व्यवस्थित तरीके से जानने–समझने की दृष्टि से अकादमिक प्रयासों को बल मिला है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक, विवरणात्मक, व्याख्यात्मक, प्रतिपादन विषयक (Expository) कुछ हद तक विश्लेष्णात्मक कहा जा सकता है। अध्ययन के क्रम में साहित्य एवं शोध अध्ययनों तक अधिकांशतः ऑन–लाइन पहुँचने का प्रयास किया गया है। इसलिए यह वस्तुतः यह डेस्क शोध (Desk Research) है। प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय ज्ञान प्रणाली के सुव्यवस्थित एवं तर्क–संगत अध्ययन हेतु एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क प्रस्तावित करने की कोशिश की गयी है।

शोध प्रश्न

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं ज्ञान प्रणाली से सम्बंधित निम्नांकित शोध जिज्ञासाओं/प्रश्नों को संबोधित करने का प्रयास किया गया है–

- भारतीय ज्ञान परम्परा एवं ज्ञान प्रणाली वस्तुतः क्या है?
- भारतीय ज्ञान परंपरा के सातत्य को किस तरह से समझा जा सकता है?
- भारतीय ज्ञान परंपरा के श्रोत क्या हैं? इनको किस प्रकार से समन्वित किया जा सकता है?
- भारतीय ज्ञान परंपरा को समझने के लिए एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क किस प्रारूप में प्रस्तावित किया जा सकता है?

भारतीय ज्ञान प्रणाली

प्राचीन काल से भारतीय समाज ने ज्ञान को सभ्यता के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में महत्व दिया है। बौद्धिक ग्रंन्थों, पांडुलिपियों के वृहत संग्रह, ज्ञान के कई क्षेत्रों में विचारकों और विविध विषय–अनुशासनों की प्रमाणित परम्परा रही है। 'भारत में तीन शब्द ज्ञान की सभी चर्चाओं में निकटता से जुड़े हुए हैं–दर्शन, ज्ञान और विद्या। दर्शन एक चिन्तन प्रणाली है, जो दृष्टिकोण को किसी ज्ञान विशेष की ओर ले जाती है। जब किसी विशेष क्षेत्र के बारे में

एकत्रित ज्ञान को चिन्तन और शिक्षणशास्त्र के उद्देश्यों के लिए व्यवस्थित किया जाता है तो उसे विद्या कहा जाता है।'[4] मुण्डकोपनिषद[5] ने समस्त संगठित ज्ञान को दो भागों में विभाजित किया है—परा विद्या और अपर विद्या। यहाँ विद्या से संकेत ज्ञान से है। वस्तुतः ज्ञान—अनुशासन, ज्ञान—मीमांशा, ज्ञान का शिक्षणशास्त्र, ज्ञान विशेष से सम्बद्ध दर्शन को 'विद्या' नाम से अभिविहित किया गया है। परा—विद्या का आशय ज्ञान के उस अनुशासन से है जो परमतत्व, ब्रह्म के ज्ञान से है, वस्तुतः यह अध्यात्मिक क्षेत्र से सम्बंधित है। अपरा विद्या के द्वारा अपरा (प्रक्रति) का पूर्ण रहस्यमय ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार से परा विद्या अनुभवात्मक ज्ञान से सम्बंधित है और आतंरिक आत्मा द्वारा दृष्टा के रूप में जाना जाता है। 'परा विद्या (ज्ञान) को प्राप्त करने के लिए ज्ञाता (जानने वाला) को तैयारी की प्रक्रिया (साधना) से गुजरना पड़ता है।'[6] अपरा विद्या अवलोकनात्मक ज्ञान से सम्बंधित है, जिसे इन्द्रियों के माध्यम से ग्रहण किया जा सकता है। अपरा प्रकृति को ही भौतिक प्रकृति कहा जाता है, अपरा विद्या के अंतर्गत भौतिक जगत का ज्ञान समाहित रहता है। मुण्डकोपनिषद में परा एवं अपरा विद्या के भेद को स्पष्ट किया गया है। 'उनमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वेद, शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष, यह अपरा है तथा जिससे उस अक्षर परमात्मा का ज्ञान होता है वह परा है।'[7] इस प्रकार से, यह भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन, चिंतन के आधार पर ज्ञानानुशासन का एकदम शुरूआती वर्गीकरण कहा जा सकता है। ज्ञानानुशासन के प्राचीनतम विभाजन/वर्गीकरण का निरंतरता/सातत्य बहुत दीर्घकाल तक कायम रहा। ऐसा माना जाता है कि बहुत लंबे समय तक अध्येता, गुरु, अन्वेषक एवं दार्शनिक, भारतीय ज्ञान परंपरा में परा एवं अपरा विद्या के फ्रेमवर्क का अनुपालन एवं अनुप्रयोग करते रहे हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन हेतु एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क की आवश्यकता

भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्व की प्राचीनतम ज्ञान प्रणालियों मे से एक है। इसका गहरा संबंध न केवल धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारों से है वरन सांसरिक जीवन से भी है। भारतीय ज्ञान परम्परा एक समृद्ध और विविधतापूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत है। इस ज्ञान परंपरा में अध्यात्म, दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान, चिकित्सा, स्वास्थ्य, अर्थनीति, राजनीति आदि मानव जीवन के सभी विषय समाहित हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं प्रणाली का व्यवस्थित फ्रेमवर्क में अध्ययन करने न केवल इसकी गहराई और व्यापकता को समझा जा सकता है बल्कि यह भी संभाव्य है कि इसे समकालीन सन्दर्भों में व्यवहृत भी किया जा सके। भारतीय ज्ञान प्रणाली के एक सुव्यवस्थित फ्रेमवर्क की आवश्यकता एवं उपयोगिता निम्नांकित कारणों से रेखांकित की जा सकती है—

- **ज्ञान का समग्र दृष्टिकोण**—भारतीय ज्ञान परंपरा में समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाया गया है। अतः किसी एक विषय/अनुशासन के लिए किसी शास्त्र/ग्रंथ विशेष को चिन्हित कर पाना एक तरह से दुष्कर कार्य है। अतः भारतीय ज्ञान प्रणाली के

अध्ययन के लिए एक विशेष फ्रेमवर्क की जरूरत महसूस होती है। भारतीय ज्ञान परम्परा एवं प्रणाली विविध प्रकार के ज्ञान को समाहित करती है। इसका व्यवस्थित फ्रेमवर्क में अध्ययन करने से हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि कैसे विभिन्न ज्ञान प्रणालियाँ (Knowledge System) एक दूसरे के साथ जुडी हुई हैं। उदाहरण के लिए वेदों से लेकर उपनिषद, वेदांग, ब्राह्मण, आरण्यक, भाष्य, टीका तक और फिर अद्वैत, द्वैत, बौद्ध, जैन दर्शन तक। ये सभी मिलकर समग्र रूप से ज्ञान प्रणाली का व्यापक एवं समग्र दृष्टिकोण निर्मित करते हैं।

- **ऐतिहासिक सन्दर्भ की दृष्टि से**–भारतीय ज्ञान प्रणाली का सातत्य और गहराई समझने के लिए ऐतिहासिक सन्दर्भ बहुत आवश्यक प्रतीत होते हैं। एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क के माध्यम से हमें विभिन्न काल–खण्डों में ज्ञान प्रणाली का विकास एवं सातत्य को ट्रेस करने/चिन्हित करने में मदद मिल सकती है। उदाहरण के लिए वैदिक काल, शास्त्रीय काल, मध्यकाल और आधुनिक काल के ऐतिहासिक सन्दर्भ में हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि किस तरह से ज्ञान की धारणा, विकास में परिवर्तन हुए हैं? और किस सीमा तक इनमें सातत्य (Continuum) बना रहा?

- **बहु–सांस्कृतिक संवाद की दृष्टि से**–भारतीय समाज अति प्राचीन काल से सांस्कृतिक बहुलता को प्रश्रय देने वाला, पोषित करने वाला तथा आपसी संवाद की जरुरत के प्रति संवेदनशील समाज रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली विभिन्न अध्यात्मिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परम्पराओं का समावेश करती है। एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क करके विभिन्न ज्ञान परम्पराओं और ज्ञान प्रणाली के बीच संवाद (Discourse) को समझने में मदद मिल सकती है। यह न केवल भारतीय समाज की विविधता को संबोधित करता है वरन ज्ञान प्रणाली में आदान–प्रदान और परिष्कार की प्रक्रिया को समझने में मददगार साबित हो सकता है।

- **नैतिक और अध्यात्मिक दृष्टि से**–भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक और अध्यात्मिक शिक्षा एक अहम् स्थान रखती है। एक सुव्यवस्थित फ्रेमवर्क के माध्यम से अध्ययन करने से हम इन शिक्षाओं के सन्दर्भ और निहितार्थ को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। यथा वेदों को उपनिषद, वेदांग, ब्राहमण, आरण्यक, भाष्य एवं टीकाओं के आलोक में सम्यक तरीके से समझा जा सकता है। भगवत गीता में दिए गए अध्यात्मिक और नैतिक उपदेश वर्तमान समय में भी प्रासंगिक माने जाते हैं। आधुनिक काल में प्रसिद्द जर्मन दार्शनिक शोपनहावर, ब्रिटिश–जर्मन भाषाविद मैक्स मूलर भारतीय ज्ञान के अनन्य प्रशंसक रहे हैं।

- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी की दृष्टि से**–भारतीय ज्ञान प्रणाली में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कतिपय पहलुओं का समावेशन दिखलायी देता है। यथा–आयुर्वेद, वास्तुकला,

गणित, परमाणु शास्त्र आदि। व्यवस्थित फ्रेमवर्क के माध्यम से हम यह अध्ययन का सकते हैं कि किस तरह से भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की आधारभूमि निर्मित कर सकती है? इस प्रकार का अध्ययन, भारतीय ज्ञान प्रणाली में विज्ञान और तकनीकी की निरंतरता, विकास एवं सातत्य को रेखांकित किया जा सकता है।

- **समकालीन चुनौतियों को सम्बोथित करने की दृष्टि से**—वर्तमान में कई जटिल समस्याएं मौजूद हैं जिनका परिप्रेक्ष्य वैश्विक है जैसे— असमानता, आतंकवाद, राष्ट्रों के मध्य निरंतर जारी संघर्ष, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, भौतिकवाद का आतंक आदि—आदि। भारतीय ज्ञान प्रणाली समस्त मानवता के कल्याण एवं मुक्ति की आकांक्षा को अभिव्यक्त करती है। सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार (वसुधा एव कुटुंबकम)[8] की तरह से देखने वाली भारतीय ज्ञान प्रणाली में समकालीन वैश्विक समस्याओं के समाधान के सूत्र खोजे जा सकते हैं, जो परम्परागत एवं समकालीन दोनों ही दृष्टिकोणों को समाहित करते हों परन्तु इसके लिए भारतीय ज्ञान परंपरा एवं प्रणाली के तार्किक अध्ययन के लिए एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क की आवश्यकता प्रतीत होती है।

परिचर्चा (Discussion)

भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारतीय उपमहाद्वीप में विगत हजारों वर्षों से ज्ञान, दर्शन, विश्वास, मान्यताओं एवं प्रथाओं का एक विविधतापूर्ण एवं समृद्ध संग्रह है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, महाकाव्यों और शास्त्रीय ग्रन्थों के पाठों में इसकी मौजूदगी देखी जा सकती है, इसके साथ ही यह भारत की विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों के योगदान से विकसित, परिष्कृत एवं समृद्ध हुई है। 'यह ज्ञान प्रणाली प्राचीन वैदिक ग्रन्थों में गहराई से निहित है और भारत की संस्कृति, बौद्धिक और आध्यात्मिक परिदृश्य को आकार देते हुए हजारों वर्ष में विकसित हुई है।'[9] भारतीय ज्ञान परंपराध्प्रणाली का उद्गम प्राचीन वैदिक काल (1500 ई0 पू0) से माना जाता है। 'संहिताओं के बाद 'ब्राह्मण' अस्तित्व में आये। ये वैदिक साहित्य के विकास की दूसरी अवस्था के द्योतक हैं। इनमें विस्तार से यज्ञ के अनुष्ठानों, विशिष्ट कर्तव्यों और आचरण के नियमों तथा बलि सम्बन्धी संस्कारों के रहस्यपूर्ण अर्थ मिलते हैं।'[10] 'ब्राहमण' प्रायः गद्य में लिखे गए और लगभग इनके साथ ही 'आरण्यक' लिखे गये। 'ब्राह्मण' के साथ—साथ लगभग इसी अवधि में 'आरण्यक' अस्तित्व में आए। 'आरण्यक' अथवा वन—लेख, ब्राह्मणों के परिशिष्ट के सामान थे और उसमें वैदिक अनुष्ठानों तथा कर्मकांडों की अध्यात्मिक तथा रहस्यमयी व्याख्या की गयी थी।'[11] ऐसा माना जाता है कि इसके बाद ही उपनिषदों की रचना हुई। उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं, इनमें वेदों कि ऋचाओं/पाठ/विषय—वस्तु की दार्शनिक व्याख्या की गयी है। इनमें स्वानुभूति (Self-Realisation) एवं अंतर्दृष्टि आधारित वर्ण्य विषय—वस्तु रही है। उपनिषदों का रचनाकाल ई0 पू0 पाँचवीं शताब्दी से माना जाता है। इनकी संख्या 108

बतलायी जाती है परंतु इनमें से ज्ञात एवं उपलब्द्ध 13 उपनिषद प्रमुख माने गए हैं। इनमें वृदारण्यक, छान्दोग्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, कौशितकी उपनिषद मुख्यतः गद्य में लिखे गए हैं, इनमें कुछ पद्य भी शामिल हैं। केन, कठ, ईसा, श्वेताश्वतर, मुंडक उपनिषद मुख्य रूप से पद्य में लिखे गए हैं। प्रश्न, मांडूक्य, और मैत्री उपनिषद गद्य में लिखे गए हैं। 'उपनिषदों ने आत्म–बोध की अवधारणा, परमात्मा और ब्रह्मांड के साथ जुड़े होने के रूप में किसी वास्तविक स्वरूप का अहसास होता है। उपनिषदों ने कर्म की अवधारणा, कारण एवं प्रभाव के नियमों की नींव भी रखी, जो जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र को नियंत्रित करता है।'[12] इस प्रकार से उपनिषद काल से भारत में कई दार्शनिक विचारधारों के उद्‌भव का मार्ग प्रशस्त किया। 'उपनिषद सामान्य अर्थों में वेदों की ही एक श्रंखला थे और उन्हें वेदांत अथवा वेदों का अंतिम भाग कहा जाता है, किन्तु विषय वस्तु की दृष्टि से वे दर्शन के विकास में एक नई दिशा के परिचायक थे। यह वह काल था जब धार्मिक कर्मकांडों के साथ–साथ परिकल्पनात्मक दार्शनिक चिंतन का प्रसार भारत में प्रारंभ हुआ।'[13] इस बात का अनुमान किया जा सकता है कि उपनिषद काल के आरंभ और उसके बाद के समय में भारत कि ज्ञान परंपरा में विचारधाराओं (Schools of Thoughts) का विकास और विविधता दृष्टिगत होती है। ऐसा माना जाता है कि ईसा पूर्व सातवीं के बाद वेदांगों[14] की रचना की शुरुआत हुई। वेदांग हिंन्दू धर्म ग्रंथ हैं। 'ईसा पूर्व सातवीं और दूसरी शताब्दी के बीच अनेकानेक दार्शनिक प्रणालियों में से कुछ प्रणालियाँ पूर्णतः विकसित होकर सामने आयीं। इनमें उल्लेखनीय हैंय लोकायत, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, योग, मीमांसा, वेदांत, जैन धर्म, बौध धर्म।'[15] कालांतर में, इन दार्शनिक प्रणालियों में से छः दार्शनिक विचार प्रणालियों को भारतीय ज्ञान परंपरा में 'षड दर्शन'[16] कहा गया। 'सबसे प्रभावशाली विचारधाराओं में से एक वेदान्त था, जो उत्तर–वैदिक काल में उभरकर सामने आया और आत्मबोध और अति–वास्तविकता की अवधारणा पर केन्द्रित था। इसने ब्रह्मांड की अद्वैत प्रकृति और सार्वभौमिक चेतना के अस्तित्व में विश्वास पर जोर दिया। एक अन्य विचारधारा (बौद्ध धर्म) छठी शताब्दी ई0 पू0 में उभरी और पूरे एशिया में फैल गयी, जिसने भारतीय ज्ञान दर्शन को बहुत (गहरे ढंग से) प्रभावित किया।'[17] उपनिषदों में परमतत्व की गूढ़ एवं दार्शनिक व्याख्या की गयी है। इनकी भाषा संस्कृत है, लिपि देवनागरी है। उपनिषदों में वर्णित निराकार परमतत्व को जानना/समझना आमजन के लिए जटिल एवं दुर्बोध था। अतः साकार ईश्वर की परिकल्पना सामने आई। इसी क्रम में पुराण लिखे गए, इन पुराणों में साकार ईश्वर के एवं उनके अवतारों के बारे में वर्णन किया गया है। पुराण का शाब्दिक अर्थ है 'प्राचीन आख्यान' या 'पुरानी कथा'। मुख्यतः 1818 पुराण बताए गए हैं। मत्स्य पुराण सबसे पहला पुराण माना जाता है। वेद मौखिक एवं श्रुति आधारित धर्म ग्रंथ हैं जबकि पुराण धार्मिक किंवदंतियों की कहानियां है और स्मृति के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंची। पुराणों का उद्देश्य जन साधारण के मानस में वेदों की शिक्षाओं को ठोस उदाहरणों, मिथकों, कहानियों, संतों, राजाओं और महापुरुषों के जीवन,रूपकों और महान ऐतिहासिक

घटनाओं के वृतांतों के माध्यम से ईश्वर के प्रति अनुराग एवं भक्ति भाव उत्पन्न करना है। ऐसा माना जाता है कि पुराण संभवतः 350 से 750 ई0 के मध्य में लिखे गए थे। भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण काल–खंड शास्त्रीय काल (300 से 500 ई0 के मध्य) माना जाता है। प्रसिद्द इतिहासज्ञ प्रो0 रोमिला थापर 'गुप्त काल' को प्राचीन भारत का शास्त्रीय युग मानती हैं। इस कालावधि में विविध शास्त्रों एवं साहित्य की रचना हुई। अतः यह कहा जा सकता है कि इस काल से भारतीय ज्ञान परंपरा में मौखिक परंपरा के सामानांतर साहित्य परंपरा की शुरुआत हुई। इनमें से कुछ प्रमुख रचनाओं को निम्नवत सूचीबद्ध किया जा सकता है–

- आर्यभटीय (लेखक आर्य भट्ट)–खगोल विज्ञान और गणित से सम्बंधित।
- ब्रह्मस्फुट सिद्धांत (ब्रह्मगुप्त)– गणित से सम्बंधित।
- चरक संहिता (चरक)– आंतरिक चिकित्सा से सम्बंधित।
- सुश्रुत संहिता (सुश्रुत)–शल्य चिकित्सा एवं शारीरिक स्नाचना से सम्बंधित।
- अष्टांग ह्रदयं (वाग्भट)–आयुर्वेद सम्बन्धी।
- अर्थशास्त्र (कौटिल्य)–राज व्यवस्था एवं राजनीति से सम्बंधित।
- शुक्रनीतिसार (शुक्राचार्य)[19]

इसके अतिरिक्त इस कालावधि में कुछ उल्लेखनीय साहित्य भी रचा गया। इनमें निम्नांकित उल्लेखनीय हैं–

- उत्तर रामचरित (भवभूति)
- नीति शतक, श्रृंगार शतक, वैराग्य शतक (भृतहरि).
- नाट्य शास्त्र (भरत मुनि).
- मनु स्मृति (मनु).

इससे पूर्व पाणिनि द्वारा अष्टाध्यायी (ई0पू0 चौथी शताब्दी) लिखा गया, इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय व्याकरण है। पतंजलि द्वारा लिखित योग सूत्र (ई0पू0 दूसरी शताब्दी) में योग के बारे में विवरण दिया गया है। इससे भी पहले महाभारत (वेद व्यास) ईसा से लगभग 1200 वर्ष पूर्व लिखा गया माना गया है।

हिन्दू धर्म साहित्य में 'सूत्र' एक विशेष प्रकार की साहित्यिक विधा है। किसी गंभीर बात/अवधारणा को 'सूत्र' रूप में अभिव्यक्त करने का एक तरीका है। उदाहरण के लिए 'पतंजलि का योग सूत्र', पाणिनि कृत अष्टाध्यायी'। सूत्र साहित्य में छोटे–छोटे किन्तु सारगर्भित 'सूत्र वाक्य' होते हैं, जो आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। इनमें प्रायः तकनीकी और परिभाश्हिक शब्दों/शब्दावलियों का उपयोग किया जाता है ताकि गूढ़ से गूढ़ बात संक्षेप में स्पष्टता के साथ की जा सके। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में सूत्र साहित्य को

महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। इसका कारण यह था कि अधिकांश ग्रंथ कंठस्थ किए जाने के उद्देश्य ध्येय से रचे जाते थे, अतः इनका संक्षिप्त होना बहुत उपयोगी साबित होता था। 'प्राचीन भारत के महान दार्शनिक अपनी प्रणालियों को संक्षिप्त और अस्पष्ट सूक्तियों में व्यक्त करते थे। इन्हें कंठस्थ करने में शिष्यों को सुविधा होती थी। इन्हीं ने बाद में भारतीय इतिहास के विविध कालों में विभिन्न भाष्यों और टीकाओं को जन्म दिया।'[20] संस्कृत साहित्य की परंपरा में 'भाष्य' एवं 'टीका' विधा इस काल में अस्तित्व में आयी। उन ग्रंथों को भाष्य कहा गया जो दूसरे ग्रन्थों की वृहत व्याख्या या टीका प्रस्तुत करते हैं। मुख्य रूप से सूत्र ग्रंथों पर भाष्य या टीकाएँ लिखी गयी हैं। भाष्य प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक हो सकते हैं। जो भाष्य मूल ग्रंथों की टीका करते हैं उन्हें प्राथमिक भाष्य कहा जाता है। उदाहरण के लिए शंकराचार्य द्वारा रचित महाभाष्य। अपेक्षाकृत छोटी टीकाओं को वाक्य या वृति कहा गया। बाद में जो रचनाएँ भाष्यों का भी अर्थ स्पष्ट करने के लिए लिखी गयीं उनको 'वार्तिक' कहा गया।

मध्य काल की व्याप्ति तेहरवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी के शुरूआती दो दशकों के बाद तक मानी जाती है अर्थात जब भारत में मुगल काल की शुरुआत होती है। मध्यकाल के समाप्त होने के साथ–साथ भारतीय ज्ञान परंपरा के सातत्य में किंचित ठहराव का अनुमान मिलता है। हालांकि भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख श्रोत उपनिषदों में दिलचस्पी कुछ हद तक बनी रही। सोलहवीं शताब्दी में बदायूनी ने 'रामायण' व 'महाभारत' महा काव्यों का फारसी में अनुवाद किया। सत्रहवीं शताब्दी में दारा शिकोह द्वारा अनेक उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में किया जो 'सिर्र–ए–अकबर' रचना के रूप में सामने आया। मध्यकाल के बीच में, अर्थात तेहरवीं सदी के उत्तरार्द्ध और चौदहवीं सदी के पूर्वार्द्ध भक्तिकाल का दौर माना जाता है। 'भक्ति की धारा बहना 14वीं सदी से शुरू हो गया था। भक्ति की आत्मा किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं थी वरन समूचे देश में सामान रूप से जागृत रही।......दक्षिण से रामानुजम, उत्तर–प्रदेश से रामानंद, बंगाल से चौतन्य, उत्तर से कबीर और नानक, राजस्थान से मीराबाई और दादू, महाराष्ट्र से तुकाराम और नामदेव, तेलंगाना से बल्लभ स्वामी, कश्मीर से लल्लेश्वरी तथा दक्खन से एकनाथ ने अलख जगाया।'[21] भारत में मध्य युग के उत्तरकाल में सूफी रहस्यवाद का सूत्रपात हुआ। 'सूफी मत का सार–तत्व था–परमानन्द की अवस्था में ईश्वरीय चेतना का अनुभवव। अपने अतार्किक रहस्यवाद की दार्शनिक विवेचना प्रस्तुत करने के प्रयास में सूफी प्रायः ही उपनिषदों और वेदांत की शिक्षा पर निर्भर करते थे।'[22] सूफी/भक्ति आन्दोलन की अपनी सीमायें थीं, तथापि समाज में व्याप्त कर्मकाण्डी रूढ़िवादिता/आडम्बरों के प्रति जनमानस को जागृत करने का प्रायः किया। उन्नीसवीं सदी में जर्मन तत्ववेत्ता शोपनहावर और जर्मन–इंग्लिश दार्शनिक मैक्स मूलर की दिलचस्पी ने, भारतीय ज्ञान परम्परा/प्रणाली की ओर शेष विश्व को तर्क संगत दृष्टि से प्रभावित किया। इसके साथ यह तथ्य भी सामने आता है 'इस्लामिक आक्रमण बढ़ने और यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के आगमन के साथ, भारतीय ज्ञान को चुनौतियों का सामना करना पड़ा और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस्लामिक शासक

अपनी परम्पराएँ एवं प्रथाएं(अभ्यास) लेकर आए और यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने पश्चिमी शिक्षा और विचारों को पेश किया, जिससे भारतीय एवं पश्चिमी दर्शन का सम्मिश्रण हुआ।'[23] बीसवीं शताब्दी में बाल गंगाधर तिलक, अरविन्द घोष, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरु, सर्वपल्ली राधाकृष्णन और बाद में कपिल कपूर आदि चिंतकों एवं दार्शनिकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राण फूंकने के प्रयास किये और भारतीय ज्ञान परंपरा के सातत्य को पुनः स्थापित करने की कोशिश की। यहाँ पर यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि आजादी के बाद भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में, औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का असर कायम रहा। इससे भारतीय ज्ञान परंपरा शनैः–शनैः विस्मृत होती गयी और निश्चित रूप से इसके सातत्य में व्यतिक्रम आया।

भारतीय ज्ञान परंपरा के सातत्य एवं श्रोतों के विहंगावलोकन के बाद, इसके व्यवस्थित अद्ययन हेतु एक फ्रेमवर्क प्रस्तावित करने का अकादमिक साहस किया जा सकता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं परंपरा के व्यवस्थित अध्ययन के लिए एक फ्रेमवर्क अग्रांकित पृष्ठ में अंकित प्रारूप में प्रस्तावित किया जा सकता है–

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन हेतु प्रस्तावित फ्रेमवर्क

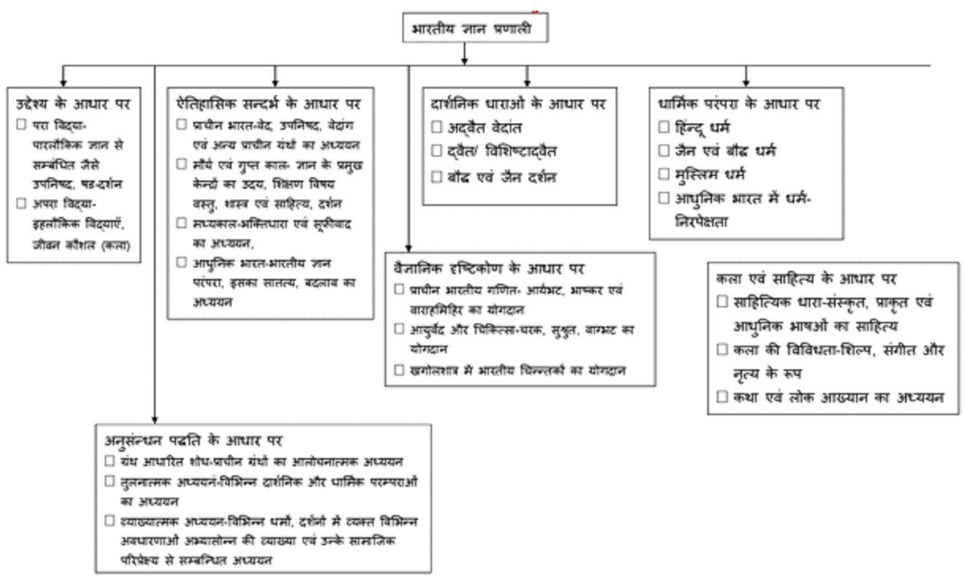

निहितार्थ

भारतीय ज्ञान प्रणाली का अध्ययन न केवल हमारे समृद्ध अतीत को समझने में सहायक है वरन हमारे वर्तमान एवं भविष्य के लिए भी मार्गदर्शन करने में सहायक साबित हो सकता है बशर्ते हम एक सुव्यवस्थित फ्रेमवर्क में इसका अध्ययन करने की कोशिश करें। इस अध्ययन

से प्राप्त अनुभव एवं अंतर्दृष्टि के आलोक में अध्ययन के निहितार्थों को निम्नवत प्रस्तुत किया जा सकता है–

- भारतीय ज्ञान प्रणाली ग्रंथ पूजा (Bibliolatrous) सदृश्य नहीं है। इसका अर्थ है कि ग्रंथ में वर्णित बात/तथ्य अंतिम नहीं हैं, उनको चुनौती दी जा सकती है, विमर्श किया जा सकता है, विपरीत मत/तथ्य भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं। 'भारतीय ज्ञान परंपरा में 'प्रदत्त सत्य' (Given Truth) की कोई अनिवार्यता नहीं है। सत्य की बहुलता की अनुमति है।.......इसलिए वे सत्य के कई/एकाधिक मार्गों की अनुमति देते हैं।'[24] यह तथ्य, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं इसकी प्रणाली के अध्ययन के लिए लचीले फ्रेमवर्क की गुंजाईश/सुविधा देता है।

- 'भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल में तीन अवधारणाएं है–धर्म, कर्म और मोक्ष, यह भारतीय दर्शन एवं जीवन शैली का आधार है।'[25] धर्म एक सामाजिक कर्तव्य माना गया, और धार्मिकता एवं सच्चाई के मार्ग का अनुसरण करना इसमें निहित माना गया। इन कर्तव्यों में स्वयं, परिवार, एवं समाज के प्रति कर्तव्य सम्मिलित हैं। कर्म का नियम का अर्थ है 'कारण एवं प्रभाव का सार्वभौमिक नियम'। अच्छे या बुरे कार्य का परिणाम अवश्य मिलता है। इस विश्वास के कारण व्यक्ति के वर्तमान जीवन के कार्य/कर्तव्य/धर्म–निर्वहन से उसके पुनर्जन्म/मोक्ष की प्रकृति/परिणाम का निर्धारण होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन क्रम में सामाजिक जीवन एवं धार्मिकता/आध्यात्मिकता को जानने–समझने में इस तथ्य के गंभीर निहितार्थ हैं।

- 'भारतीय ज्ञान परंपरा एक अन्तः विषयक वैचारिक ढाँचे (Conceptual Interdisciplinary Framework) पर संचालित है। इस तरह के ढांचे की मौजूदगी ने विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के लिए ज्ञान मीमांसीय सामंजस्य (Epistemology Harmony) की स्थिति में जाना संभव बना दिया। इस ढाँचे ने विभिन्न विचारधाराओं के बीच व्यापक बहस को भी संभव बनाया।'[26] इस प्रकार का अन्तःविषयक दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संगति में प्रतीत होता है। वस्तुतः यह नीति ज्ञानार्जन के अन्तःविषयक दृष्टिकोण पर अत्यधिक बल देती है।

- भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान प्रणाली का अध्ययन आज के संदर्भ में विशेष स्थान रखता है, विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासांगिकता बढ़ गयी है। एक व्यवस्थित ढांचे में यह अध्ययन उपयोगी साबित हो सकता है। इससे न केवल भारतीय ज्ञान प्रणाली के अतीत, उसकी निरंतरता/सातत्य को समझने में मदद मिल सकती है वरन समकालीन चुनौतियों को संबोधित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण मिल सकता है।

- 'पाश्चात्य ज्ञान परंपरा में एक बार में/एक समय में एक ही 'सत्य' को प्रश्रय दिया जाता रहा है। वस्तुतः पाश्चात्य ज्ञान परंपरा में ज्ञान का उद्देश्य शक्ति/सामर्थ्य प्राप्त करना तथा उसका उपयोग करना मुख्यतः रहा है.........भारतीय विचार प्रणाली में ज्ञान का कार्य/लक्ष्य दूसरों पर शक्ति प्रयोग करना नहीं है, बल्कि स्वयं मोक्ष पाना, अपनी सीमाओं/बाधाओं से मुक्ति हेतु करना है।'[27] भारतीय ज्ञान परंपरा का अभीष्ट शांति, बोध, मोक्ष, मानव एवं मानवता का कल्याण करना है। मौजूदा वैश्विक समस्याओं के आलोक में इसके गंभीर निहितार्थ हैं। इस दृष्टि से हमारी ज्ञान परम्परा, पश्चिमी ज्ञान परम्पराओं से अव्वल प्रतीत होती हैं, और यह अपनी ज्ञान परंपरा के बारे में हीनता बोध से उबरने में मददगार साबित हो सकता है।

- भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान को किसी विषय/अनुशासन में सीमाबद्ध करने के बजाय इसे समग्रता एवं व्यापकता में देखा गया है। यथा–मानव स्वास्थ्य एवं खुशहाली (Health-Well Being) में योग, ध्यान, आयुर्वेद, दर्शन, जीवन पद्धति आदि विषयों/अनुशासनों को समाहित किया गया है। दूसरे, भारतीय ज्ञान परंपरा में विषयों/अनुशासनों की एक दूसरे पर व्यापकता (Overlap) है। 'भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक प्रमुख पहलू जीवन के प्रति इसका समग्र दृष्टिकोण है। यह अस्तित्व के सभी पहलुओं–व्यक्ति से समाज तक, मानुषी से प्रकृति तक, और भौतिक से आध्यात्मिक तक के अंतर्संबंध को स्वीकार करता है।'[28] एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क ज्ञानानुशासन (Discipline of Knowledge) को सही तरीके से वर्गीकृत करने और विभिन्न विषयों के अंतर्संबंध को समझने में मदद मिल सकती है।

- भारतीय ज्ञान प्रणाली और इसकी परंपरा को व्यवस्थित फ्रेमवर्क में व्यवस्थित अध्ययन करने से, भारतीय ज्ञान प्रणाली की व्यवहार्यता, वैद्यता, प्रामाणिकता एवं प्रासांगिकता को स्थापित करने में मदद मिल सकती है। यथा–आयुर्वेद में चिकित्सा पद्धति को वैज्ञानिक आधार पर समझना, ज्योतिष को खगोलशास्त्र एवं गणित के आधार पर समझने का उपक्रम उपयोगी साबित हो सकता है।

- भारतीय ज्ञान प्रणाली का व्यवस्थित फ्रेमवर्क में अध्ययन, प्राचीन भारत की समृद्ध साहित्यिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक विरासत को समझने, सँजोने और वर्तमान से जोड़ने में मददगार साबित हो सकता है। यह उपक्रम न केवल प्राचीन अतीत से वर्तमान का जुड़ाव के लिए जरूरी प्रतीत होता है वरन भविष्य के लिए मार्गदर्शन भी कर सकता है। हमारे देश का महत्वाकांक्षी स्वप्न है, विश्व का नेतृत्व करना, विश्वगुरु की जिम्मेदारी निर्वहन करना। इसके लिए बहुत ही जरूरी है कि ज्ञान प्रणाली का प्रामाणिक एवं विश्वसनीय ज्ञानशास्त्रीय आधार मौजूद हो। अध्ययन के एक व्यवस्थित ढांचे से यह संभाव्य प्रतीत होता है।

समेकन

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस अध्ययन में प्रस्तावित फ्रेमवर्क एक शुरूआती प्रस्ताव के रूप में विद्वतजनों के समक्ष प्रस्तुत है, इसमें फेर–बदल की बहुत सारी संभावनाएं प्रत्याशित हैं, और उनका हमेशा स्वागत है। प्रस्तावित फ्रेमवर्क से अध्ययन एवं शोध के भटकाव एवं व्यतिक्रम को बहुत हद तक कम करने में मददगार साबित हो सकता है परन्तु यहीं पर यह कहना बहुत जरुरी हो जाता है कि प्राचीन ग्रंथों एवं साहित्य (जो वस्तुतः संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं), का भारत की आमजन की भाषा में उपलब्धता भी उतनी जरुरी है। यह अनुवाद कार्य एक बड़ी चुनौती है। वस्तुतः कोई भी ज्ञान प्रणाली विश्वसनीयता का मानक तभी प्राप्त कर सकती है जब आमजन की समझ एवं अभ्यास के दायरे में आती है। दूसरी बड़ी चुनौती इस मामले में यह नजर आती है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ किस तरह से समंजित किया जाए? व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा में इन ज्ञान प्रणाली की प्रासांगिकता को किस तरह से साबित किया जाए और स्थापित किया जाए? यह चुनौतीपूर्ण जरुर है परन्तु असंभव नहीं। इस दिशा में निरंतर संवाद, शोध, विमर्श एवं निर्णय की दृढ़ता से यह संभाव्य नजर आता है।

(6012 शब्द)

आभार

प्रस्तुत अध्ययन से, भारतीय ज्ञान परम्परा एवं इसके सातत्य की समझ से वैचारिक लाभ तो मिला ही, इसके साथ 'भारत का ज्ञान' से सम्बंधित हीनता बोध से उबरने में भी बहुत हद तक मदद मिली। इस जटिल विषय पर शोध आलेख को लिखने के लिए निरंतर मार्गदर्शन और अभिप्रेरण के लिए प्रो0 दीपक पालीवाल जी का हृदय से आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इसके अभाव में कदाचित यह दुष्कर कार्य संभव नहीं था।

संदर्भ

1. सखाऊ, सी. एडवर्ड., भारतः अलबरूनी (1992), अनुवाद–नूर नबी अब्बासी, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरु भवन, इ इंस्टिट्यूशनल एरिया फेज II, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110070.
2. कपूर, कपिल एवं कुमार अवधेश (2020), इंडियन नॉलेज सिस्टम, पृष्ठ–21. Retrieved from http://www.lkouniv.ac.in/site/writersaddata/siteContent/202004120632194475.nishi_indian_knowledge_system-pdf
3. भारत सरकार, (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–24.
4. कपूर, कपिल. एवं सिंह, अवधेश कुमार (2005), इंडियन नॉलेज सिस्टम–सम्पादित, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला, डी. के. प्रिंट वर्ल्ड (प्रा0) लिमिटेड, नई दिल्ली. पृष्ठ–11.

5. मुण्डकोपनिषद, 1.1.4. द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चीवापरा च (ब्रह्म वेत्ताओं ने कहा है कि दो विद्याएँ जानने योग्य हैं–एक परा और दूसरी अपरा)
6. वही, 1.1.5. तत्रापरा, ऋग्वेदो, यजुर्वेदः, सामवेदो अथर्वेदः, शिक्षा कल्पो व्याकरणं छंदों ज्योतिषमिति। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते (उनमें इनमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष यह अपरा विद्या है तथा जिसमें उस अक्षर परमात्मा का ज्ञान होता है वह परा विद्या है।
7. कपूर, कपिल. एवं सिंह, अवधेश कुमार (2005), इंडियन नॉलेज सिस्टम–सम्पादित, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला, डी. के. प्रिंट वर्ल्ड (प्रा0) लिमिटेड, नई दिल्ली. पृष्ठ–12.
8. 'महा' उपनिषद, अध्याय 6, श्लोक 71० अयं बंधुरयम नेति गणना लघुचेतसाम।। उदारचरितानम तु वसुधेव कुटुंबकम।। (यह मेरा बंधु है और यह नहीं है, इस तरह की गणना संकुचित मन वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो सम्पूर्ण पृथ्वी ही परिवार है।)
9. कपूर, कपिल एवं कुमार अवधेश (2020), इंडियन नॉलेज सिस्टम, Retrieved from http://www.lkouniv.ac.in/site/writersaddata/siteContent/202004120632194475.nishi_indian_knowledge_system-pdf
10. दामोदरन, के., (2018), भारतीय चिंतन परंपरा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा0) लि0, 5–ई, दूसरी मंजिल, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली–110055. पृष्ठ–45.
11. वही, पृष्ठ–45.
12. ओलीवेल्ले, पी० (2024), उपनिषद० Retrieved from www.britannica.com. https://www.britannica.com/topic/Upnishad.
13. छः वेदांग हैं–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष। इनके प्रतिपाद्य विषय क्रमशः ध्वनि विज्ञान, अनुष्ठान, व्याकरण, भाषाशास्त्र, छंद रचना के मीटर, खगोल विज्ञान।
14. दामोदरन, के., (2018), भारतीय चिंतन परंपरा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा0) लि0, 5–ई, दूसरी मंजिल, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली–110055. पृष्ठ–46.
15. वही, पृष्ठ–83.
16. षड दर्शन एवं इनके प्रणेता में शामिल हैं– सांख्य (कपिल), न्याय (गौतम), योग (पतंजलि), वैशेषिक (कणाद), मीमांसा (जैमिनी), वेदांत (बादरायण).
17. दास, डी. एस., (2021), वेदांत फिलोसोफी एंड इट्स सिग्निफिकेंस इन सर्चिंग दी अब्सोल्युट ट्रुथ, Retrieved from www.researchgate.net; https://www.researchgate.net/publication/352401919_Vedanta_Philosophy_and_its_Significance_in_Searching_the_Absolute_Truth.
18. अठारह पुराण–ब्रह्म, पद्म, विष्णु, वायु, भागवत, नारद, मार्कन्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्म वैवर्त, लिंग, वाराह, स्कन्ध, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्मांड।
19. शुक्राचार्य के काल का निर्धारण कठिन है, तथापि विषय वस्तु एवं शैली के आधार पर यह रचना कौटिल्य के अर्थशास्त्र के बाद की प्रतीत होती है। शुक्र नीति में उल्लेख है कि विद्याओं की संख्या यद्धपि अनंत है, तथापि 32 विद्याएँ और 64 कलाएं उपयोगी हैं। ये 64 कलाएं हैं–नृत्य, वादन, वस्त्र–सज्जा, रूप परिवर्तन, शैय्या सजाना, द्युत क्रीड़ा, रति ज्ञान, मद्य बनाना और उसे सुवासित

करना, शल्य क्रिया, पाक कार्य, बागवानी, पाषाण/धातु आदि से भस्म बनाना, मिठाई बनाना, धात्वोषधि बनाना, मिश्रित धातुओं का पृथक्करण, धातु मिश्रण, नमक बनाना, शस्त्र संचालन, कुश्ती (मल्ल युद्ध), लक्ष्यवेध, वाद्य संकेत द्वारा व्यूह रचना, गजादि द्वारा युद्ध कर्म, विविध मुद्राओं द्वारा देव पूजन, सारथ्य, गजादि की गति शिक्षा, वर्तन बनाना, चित्र कला, तालाब प्रासाद आदि के लिए भूमि तैयार करना, घटादि द्वारा वादन, रंगसाजी, भाप के प्रयोग, नौका राथादि मानों का ज्ञान, यज्ञ की रस्सी बटने का ज्ञान, कपडा बुनना, रत्न परीक्षण, स्वर्ण परीक्षण, कृत्रिम धातु बनाना, आभूषण गढ़ना, कलई करना, चरम कार्य, चमड़ा उतारना, दूध के विभिन्न प्रयोग, चोली आदि सिलना, तैरना, बर्तन माझना, वस्त्र प्रक्षालन (संभवतः पालिस करना), क्षौर कर्म, तेल बनाना, कृषि कार्य, वृक्षारोपण, सेवा कार्य, टोकरी बनाना, कांच के बर्तन बनाना, खेत सींचना, धातु के शस्त्र बनाना, जीन काठी या हौदा बनाना, शिशु पालन, दंड कार्य, सुलेखन, ताम्बूल रक्षण, कला मर्मज्ञता, नट कर्म, कला शिक्षण, साधने की प्रक्रिया।

20. दामोदरन, के., (2018), भारतीय चिंतन परंपरा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा0) लि0, 5–ई, दूसरी मंजिल, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली–110055. पृष्ठ–83.
21. दिनकर, रामधारी सिंह., (1956), संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, प्रयागराज–20001. पृष्ठ–37.
22. दामोदरन, के., (2018), भारतीय चिंतन परंपरा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा0) लि0, 5–ई, दूसरी मंजिल, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली–110055. पृष्ठ–306.
23. बिस्वास, ए. के., (2016), डेवलपमेंट ऑफ एजुकेशन इन इंडिया ड्यूरिंग दि मेडिएवल पीरियडः अ हिस्टोरिकल एप्रोच, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यु. पृष्ठ–260–66.
24. कपूर, कपिल. एवं सिंह, अवधेश कुमार (2005), इंडियन नॉलेज सिस्टम–सम्पादित, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला, डी. के. प्रिंट वर्ल्ड (प्रा0) लिमिटेड, नई दिल्ली. पृष्ठ–26.
25. मुंडे, एकनाथ., (2023), दी विजडम ऑफ भारतः एन एक्सप्लोरेशन ऑफ दी इंडियन नॉलेज सिस्टम. हड़स्प्सर, पुणे–28, महाराष्ट्र, इंडिया।
26. कुमार, अवतन., (2021), ओपिनियन, टाइम्स ऑफ इंडिया, 16 मार्च, 2021.
27. कपूर, कपिल. एवं सिंह, अवधेश कुमार (2005), इंडियन नॉलेज सिस्टम–सम्पादित, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला, डी. के. प्रिंट वर्ल्ड (प्रा0) लिमिटेड, नई दिल्ली. पृष्ठ–28.
28. इंबड़स, एच., (2017), इंडियन फिलोसोफिकल फाउंडेशन ऑफ स्प्रिच्युलिटी एट दी एंड ऑफ लाइफ. मौर्टिलिटी, 320–33.